12-02-16 ओम् शान्ति ''अव्यक्त बापदादा'' मधुबन

सभी बापदादा के **लाडले बच्चों** को देख बापदादा भी बहुत हार्षित हो रहे हैं क्योंकि **हर बच्चा बाप को कितना प्यारा है।** हर एक का चेहरा देख बापदादा के मन में **एक-एक बच्चे की सूरत में बाप की मूर्त** देख बाप को भी कितना हर्ष होता है। जैसे बच्चों की हर शक्ल में बाप को देख बाप हार्षित होते हैं ऐसे ही हर एक भारत या विदेश दोनों तरफ के बच्चों को साकार में सामने देख बाप कितना खुश होता है। **वाह हर एक बच्चा वाह!**

हर एक की दिल यही बोल रही है **वाह बाबा वाह!** जो **साकार रूप में बाप और बच्चे का यह मिलन कितना प्यारा** लग रहा है। कितने समय के बाद साकार में बापदादा बच्चों को देख और बच्चे भी बाप को देख कितना हार्षित होते हैं। **हर एक की दिल में यही गीत बज रहा है वाह बाबा वाह! और बाप के दिल में भी यही गीत है वाह बच्चे वाह!**

हर बच्चे के दिल में बाप समाया हुआ है। ऐसे प्रेम स्वरूप हर बच्चा दोनों के दिल में मेरा बाबा और बाप के दिल में मेरे बच्चे। इस घड़ी मैजारिटी हर बच्चे सम्मुख बाप को देख **दिल में मुख में मेरा बाबा,** यही गीत सुन रहे हैं। हर एक के दिल में मेरा बाबा, भले नम्बरवार हैं लेकिन समाया क्या है? मेरा बाबा। और **बाप के दिल में कौन? मेरे बच्चे।**

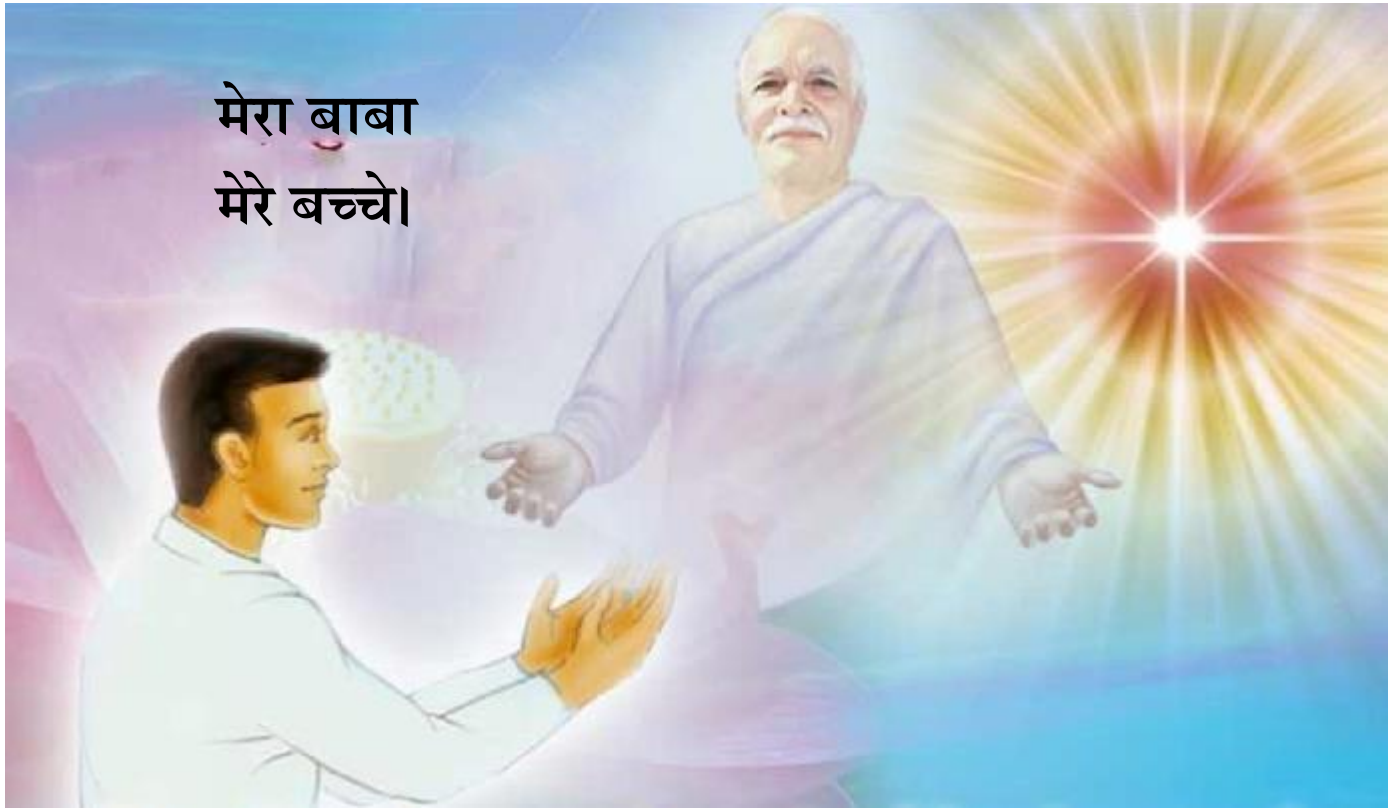

यह दिल का मिलन चित्र के रूप में देखो तो हर एक लव में लीन है। हर एक की दिल क्या कह रही है? मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और बाबा भी एक-एक बच्चे का प्यार दिल में समाये हुए हैं।

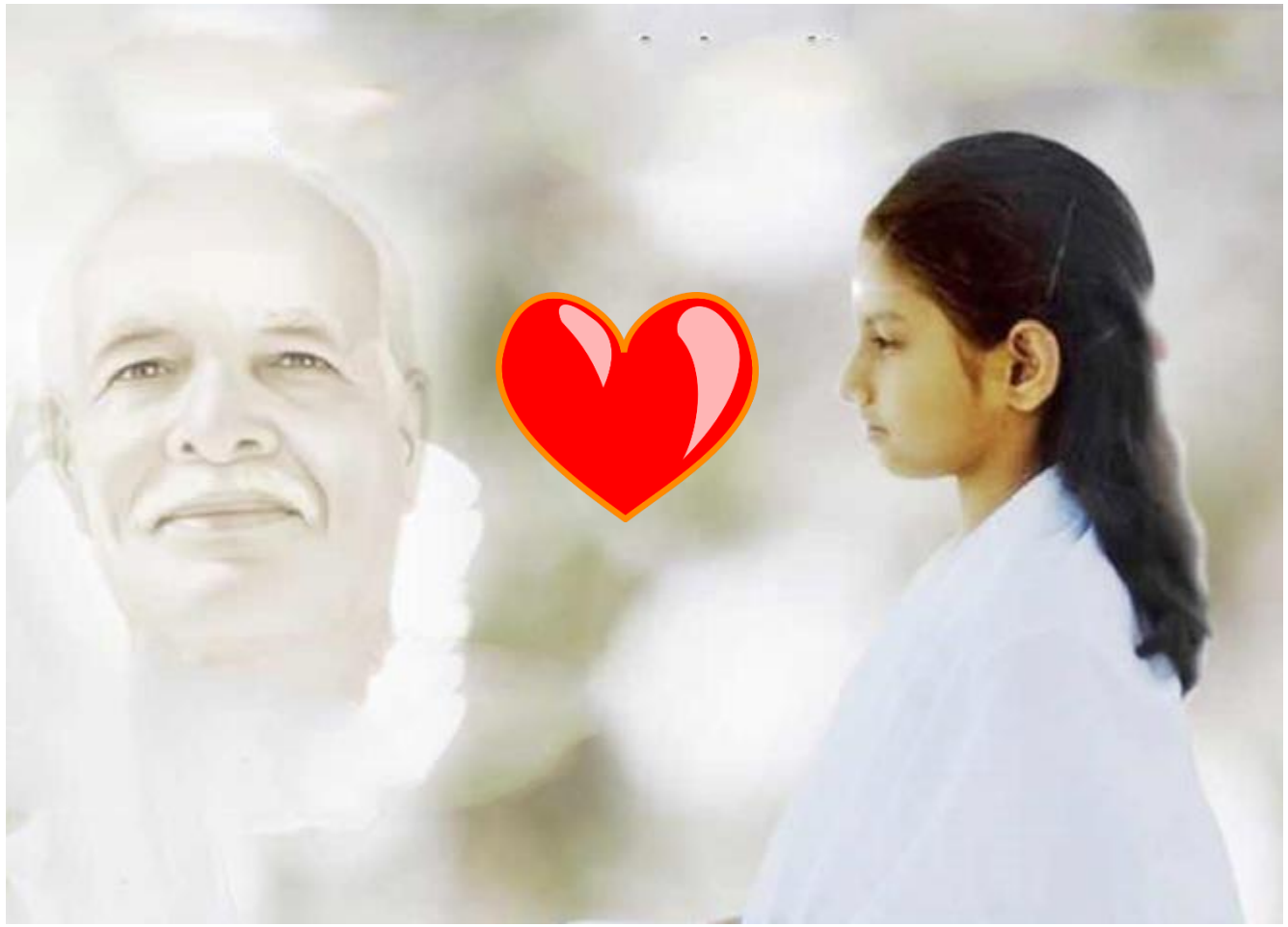

भक्ति में ऐसे नहीं सोचा था तो ऐसे प्रभु मिलन हम बच्चों के भाग्य में है लेकिन ड्रामा कहें या तकदीर कहें, हर एक बच्चे के भाग्य को देख बाप को कितनी खुशी होती है। वाह बच्चे वाह! ऐसा मिलन जैसे सम्मुख मिल रहे हैं। तो इसको कहेंगे ऐसे मिलन का मौका मिला हुआ है ड्रामा में। बहुत अच्छा मन आनंद में आ जाता है। भले रूप दूसरा है फिर भी मिलन तो है ना! क्या भासना आती है? बाप मिलने आया है। बच्चे मिलने आये हैं। ऐसा भाग्य साकार रूप में ऐसे मिलेगा यह ड्रामा में नूंधा हुआ है, यह देख कितने हार्षित हो रहे हैं।

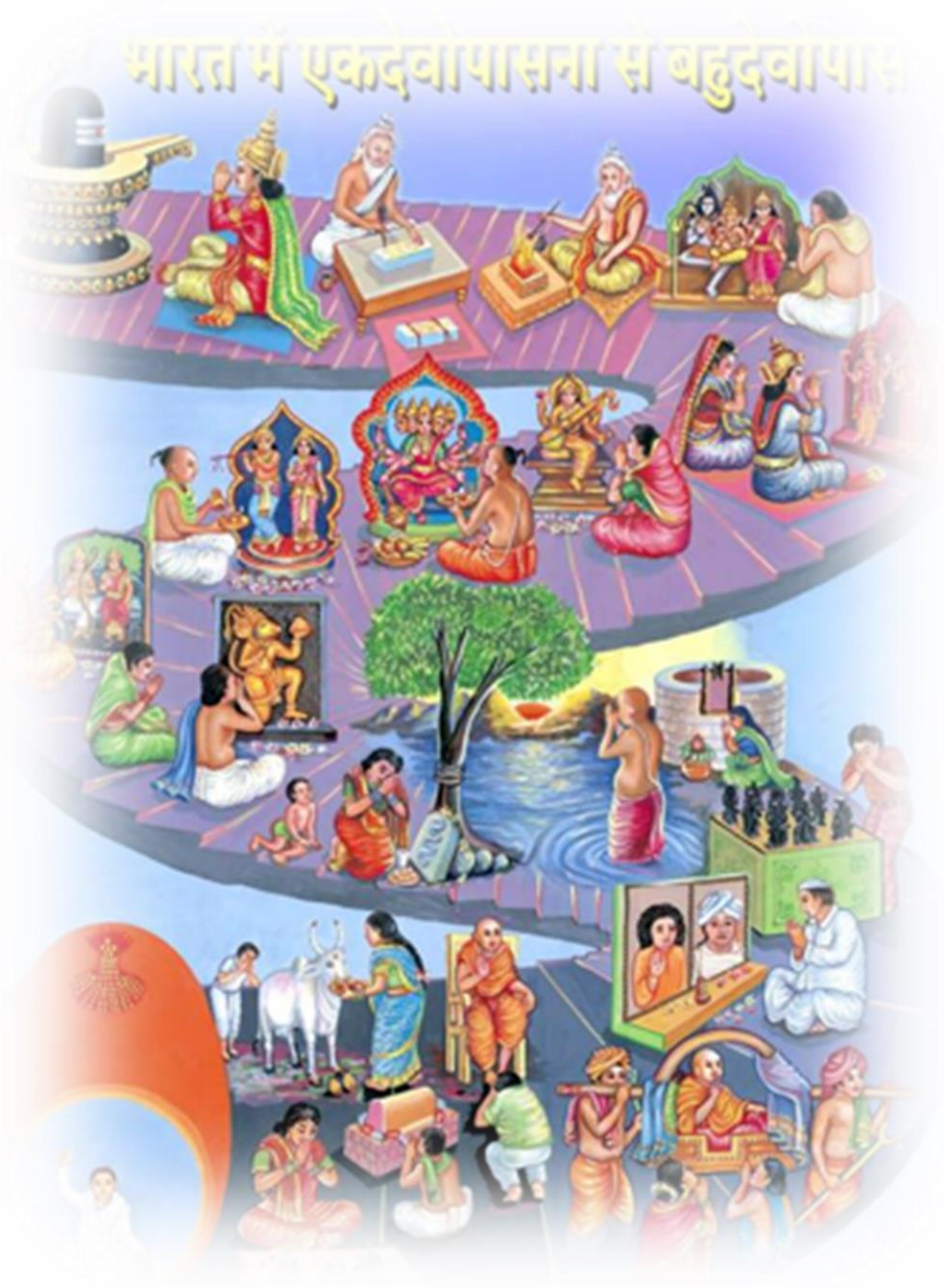

अभी बाबा की एक ही हर बच्चे के साथ यही दिल है, हर एक की दिल यही कहती है बच्चा हर एक बाप की दिल में समाये हुए रहें और समाते समाते इतनी खुशी का अनुभव करते हैं, जो करते हुए भी दिल नहीं पूरी होती है। दिल से हर समय यही निकलता है, ऐसा बाबा, कलियुग में ऐसी चीज मिले, कितना भाग्य है।

साइंस वालों को थैंक्स देते हैं जो ऐसा मिलन के रास्ते बनाये हैं जो सम्मुख न होते, सम्मुख का अनुभव कराते हैं। साइंस वालों को बापदादा निमित्त बनाने वाले देख दिल ही दिल में उन्हों के भी गीत गाते हैं कि वाह! यह बाप और बच्चे का मिलन सदा होता रहे तो कितना अच्छा है लेकिन ड्रामा में इतना ही है। फिर भी साइंस ने मिलन का रास्ता बहुत सहज बना दिया है।

कलियुग में साधन तो बहुत अच्छा बनाया है फिर भी सामने भासना तो देते हैं ना। कुछ भी, रूबरू की भासना तो हो नहीं सकती लेकिन फिर भी **बाबा की शक्ल, नयन, चैन, मिलन यह भी एक संगम का वन्डर है।** तो सभी बच्चे खुश हो जाते हैं ना देख करके बात करते, मिलते खुश हो जाते हैं इसलिए कोशिश करते हैं मधुबन चलो, मधुबन चलो। और बाप भी हर बच्चे को देख कितना खुश होता होगा! **सारे ड्रामा में यह मिलन भी विचित्र है।** तो जब भी ऐसा दिन होता है तब **हर बच्चा कोशिश करता है पहुंच जायें। लेकिन कलियुग है, कलियुग में सब सुख नहीं पूर्ण होते हैं। होता है लेकिन जो मनुष्य चाहता है वह सब पूरा नहीं हो सकता।** तो बापदादा को भी जब सुनते हैं ऐसे मिलन हो सकता है तो अन्दर कितनी खुशी होती है।

हर एक के दिल में बाप की याद तो सदा रहती है कि मुश्किल है? जो समझते हैं कि बाप की याद भूलना मुश्किल है वह हाथ उठाना। भूलना मुश्किल है? फिर क्या करते हो आप? दिल में ही समा देते हो! और कई बच्चे तो देखा है इतना दिल में याद आता है जो चुपचाप बैठे हैं अकेले, लेकिन ऐसे ही बैठे हैं जैसे कोई सामने बात कर रहा है क्योंकि सभी को पता है कि यह मिलन का दिवस बहुत अमूल्य है।

हमारे सामने ही बाबा बैठा है, ऐसे साधन भी बनाये तो हैं ना। लेकिन **पहली बात है हमारे दिल में ही इमर्ज** हो सकता है, मिलन हो सकता है, यह भी ड्रामा में नूंध है। तो **बाबा साइंस वालों को बहुत-बहुत याद करते हैं कि और भी कुछ नजदीक का बनाओ, जिसमें बच्चे भी खुश तो बाप भी खुश। यह बताते हैं तो बच्चे कितना योग लगाके साइंस वालों के पीछे पड़ के इन्वेन्शन निकालते हैं।** तो बापदादा भी बच्चों का दिल का याद जो है वह देख बैठ नहीं सकते। **कोई न कोई साधन निकलता ही रहता जिससे गरीब भी देख सके, साहूकार भी देख सके और सबसे सहज मिलन दिल का मिलन है।**

बाप भी याद करते बच्चे भी याद करते लेकिन **याद का रेसपान्ड मिलता है तो उसमें कितनी खुशी** होती है। याद तो सभी करते हैं, कोई भी होगा ना, अन्जान भी होगा छोटा बच्चा तो भी कहेगा आज फोटो दो तो देखें बाबा कैसे मुरली चलाता है। यह है दिल का लगाव। **बस बाबा शब्द कहते, सुनते, देखते बाबा बाबा बाबा, बाबा बच्चे में, बच्चे बाबा में समा जाते हैं।** और बच्चे भी कोशिश करके देखो कहाँ-कहाँ से कैसे-कैसे पहुंच जाते हैं। **यह बाप और बच्चों का मिलन या आत्मा परमात्मा का मिलन कितना अमूल्य है। इस अमूल्य मिलन के समय को संगमयुग कहा जाता है। इस युग की महिमा करो तो कितना नयन गीले हो जाते हैं।**

यह बाप और बच्चों का मिलन या आत्मा परमात्मा का मिलन कितना अमूल्य है।

बाबा इम्तहान लेंगे, अभी अचानक इम्तहान लेंगे कि सारे दिन में कितना टाइम याद रहता है? क्योंकि बहुत प्यारा है, यह तो सभी कहते हैं। यह कर दें, यह कर दें, वह तो ठीक है, दिल में प्यार तो सभी का है लेकिन कितना समय निकालके याद में बैठते हैं, कैसे बैठते हैं वह तो हर एक की हिस्ट्री खुद जानें या बाप जाने।

पहले सबसे अच्छी याद तो दिल की है। दिल में बाबा बाबा ही याद हो, चलते फिरते कुछ भी करते इसलिए बाप की भी दिल नहीं रहती, बच्चों की भी दिल नहीं रहती तो ड्रामा में मिलन का साधन भी अच्छा रखा है। साइंस ने इस समय मिलन का रास्ता बहुत अच्छा बनाया है। छोटी सी कैसेट रख दो जब चाहे तब आवाज सुनो। तो बाबा कहते हैं साइंस ने भी कमाल की है। सुनने का भी देखने का भी। लेकिन बाप सदा कहता है यह तो अल्पकाल के साधन है लेकिन सदा आपके साथ हो, वह दिल। दिल में बाबा को याद करो और इमर्ज रहे यह प्रैक्टिस जरूरी है।

सबसे सहज याद करने का तरीका जो है वह याद बिना साधन के दिल में आ जाए, निकालना चाहे तो भी नहीं निकले, साधन इतने हैं जो कमाल साइंस का है और ऐसे टाइम पर साइंस का साधन हुआ है जो बच्चे कहाँ भी हों, विलायत में हों या यहाँ हों, सब साधनों से मिलन मना सकते हैं। तो **संगम पर सिर्फ बाप का साथ नहीं मिलता लेकिन साधन जो हैं उनका भी बहुत साथ मिलता है।**

बाप ने देखा तो **बच्चों की दिल बाप से, बाप की दिल बच्चों से।** दिन याद करते रहते हैं, कब मिलन होगा, कब होगा। बच्चों का **बाप से और बाप का भी बच्चों से बहुत दिल का प्यार है।** बस उन दिनों की तारीख याद करते रहते, कब शुरू होगा। तो सब ठीक हैं? सबकी तबियत ठीक है। **बाप को भी बच्चों को देख बहुत खुशी होती है, जितने बच्चे ज्यादा उतनी बाप को खुशी है।**

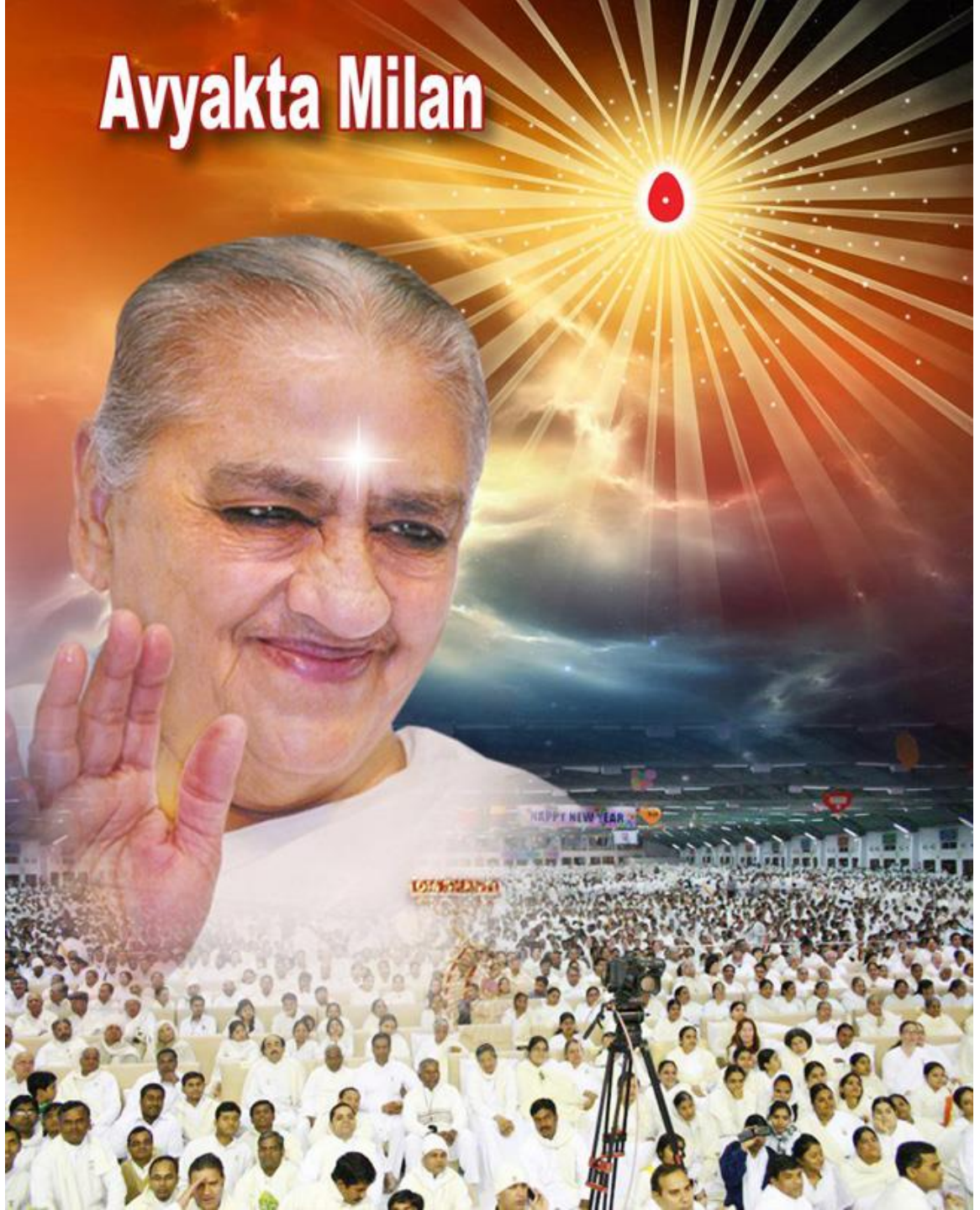

बापदादा भी देखकर हार्षित होते हैं बच्चों की दिल मुरली से कितनी है। खजाना है ना। तो कैसे भी सरकमस्टांश होते भी मुरली सुनने पहुंच जाते हैं। यहाँ भी जो दिल से पहुंचे हैं उन सबका सम्मुख मिलन तो हो गया लेकिन सम्मुख मिलन तो हुआ, अभी इसी मिलन को बढ़ाते जाना। जहाँ तक हो सके वहाँ तक बढ़ाना। यह पुरूषार्थ करते आगे बढ़ते चलो। हाल तो यह भी भर गया है। बाप बच्चों को देख करके खुश होते हैं।

विदेश का असर देश में आता, देश का असर विदेश में हैं। एक दो के मददगार भी हैं।

तबियत ठीक नहीं है - घबराना नहीं, घबराने से और ही हो जाता है। जिसके लिए सोचते हैं वह ज्यादा हो जाता है, इसलिए यही सोचो जैसे दवाई हो गई है। बाबा को याद किया, बीमारी की गोली एक बारी ले ली बस। भले जो दवाई है ना, उसको जिस समय लो उस समय समझो यह दवाई हमारे काम में आई। भले धीरे-धीरे आयेगी लेकिन आपको फर्क महसूस होगा, बस। और सभी को पता है कि इनकी तबियत खराब है तो सभी का ध्यान आपमें जायेगा।

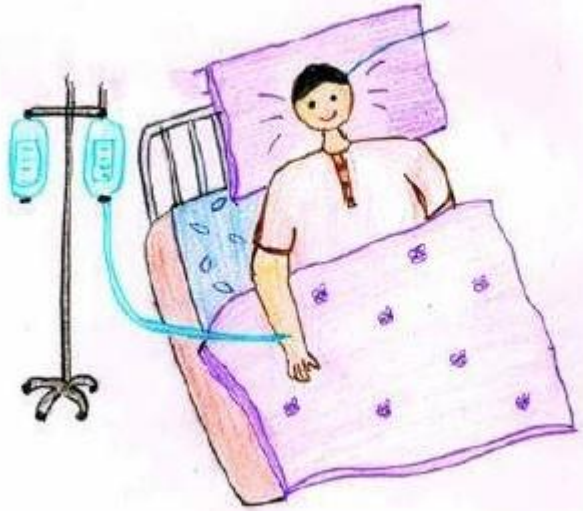

तीनो भाईयों से:- सभी खुश हैं। सब खा पी तो रहे हैं ना। यह तो खाते रहना चाहिए। खाओ पिओ, जरूरत नहीं है टोली नहीं खाओ, समझो मेरी तबियत खराब है। भोग तो सभी को आटोमेटिक मिलता है। भोग तो सबके पास बीमारी में भी पहुंच जाता है। **लेकिन ऐसा बेफिक्र नहीं बनना। अच्छा है सम्भाल करो लेकिन ज्यादा नहीं, बीच का जैसे होना चाहिए वैसे। क्योंकि यहाँ तो ढेर हैं ना। एक दो को देखकरके भी एक दो का तीर लगता है।**

बच्चे बढ़ेंगे तो साधन भी जरूर बढ़ेंगे ना। भाषण सुनें वह अवस्था तो चाहिए। अगर ठीक प्रबन्ध नहीं होगा तो मुरली क्या सुनेंगे! साधन चाहिए लेकिन साधन के वशीभूत होके नहीं। यहाँ साधन के बिना तो चल ही नहीं सकते, क्योंकि बरसात ऐसी होती है। अगर ज्ञान की रीति से देखें तो टूमच में नहीं जाना है। साधन यूज जरूर करना चाहिए लेकिन हद।

विदेश की बड़ी बहिनों से

आप लोग अपने शरीर के हिसाब से तो सम्भाल करते ही हो। ऐसे भी नहीं कि शरीर का क्या करें, भोगना तो भोगनी ही पड़ेगी ना। नहीं। अपनी सम्भाल पहले से करो, जब पहले से पता है बीमारी आने की निशानी यह है, उसकी दवाई यह है, वह भी जानते हो। तो पहले सब प्रबन्ध करो। अभी डाक्टर तो छोटे-मोटे सब हो गये हैं, तो शरीर की भी सम्भाल करो।

(नीलू बहन ने कहा बाबा रथ को पहले ठीक रखना फिर आने का प्रोग्राम देना) जो ड्रामा में होगा वह होगा, इसीलिए आप सभी अपना विचार भले दे दो लेकिन यह नहीं कहो यह होना चाहिए।